# पैंटी से ब्लू फ़िल्म तक

मेरा नाम रोशनी है। मैं साउथ दिल्ली में अपने मम्मी-पापा के साथ रहती हूँ। मेरी उम्र उन्नीस साल है, गोरा बदन, काले लंबे बाल, पाँच फ़िट चार इंच हाइट और मेरे आँखों का रंग भूरा है। एक दिन मैं अपनी सहेलियों के साथ शॉपिंग कर घर पहुँची। अपने कमरे में पहुँच मैंने अपनी मेज़ की दराज़ खोली तो पाया की मेरी ब्लू पैंटी वहाँ रखी हुई थी। मैंने कभी अपनी पैंटी वहाँ रखी हो ये मुझे याद नहीं आ रहा था।

इतने में मैंने क़दमों की आवाज़ मेरे कमरे की ओर बढ़ते सुनी। मेरे समझ में नहीं आया की मैं क्या करूँ। मैं दौड़ कर अलमारी के पीछे जा छुपी। देखती हूँ कि मेरा छोटा भाई अमर जो 18 साल का है अपने दोस्त राज के साथ कमरे में दाख़िल हुआ।

"रोशनी" - अमर ने आवाज़ लगाई।

मैं चुपचाप अलमारी के पीछे छुपी उनको देख रही थी।

"अच्छा हुआ वो घर पर नहीं है। राज मैं पहली और आखरी बार ये सब तुम्हारे लिए कर रहा हूँ। अगर उसे पता चल गया तो वो मुझे जान से मार देगी।" - अमर ने कहा।

"शुक्रिया दोस्त, तुम्हें तो पता है तुम्हारी बहन कितनी सुंदर और सेक्सी है।" - राज ने कहा।

अमर मेरा ड्राअर खोला और वो ब्लू पैंटी निकाल कर राज को पकड़ा दिया। राज ने वो पैंटी हाथ में लेकर उसे सूँघने लगा, "अमर तुम्हारी बहन की चूत की ख़ुशबू अभी भी इसमें से आ रही है।"

अमर ज़मीन पर नज़रें गड़ाए ख़ामोश खड़ा था।

"यार, ये धुली हुई है। अगर ना धुली हुई होती तो चूत के पानी की भी ख़ुशबू आ रही होती।" - राज ने पैंटी को चूमते हुए कहा।

"तुम पागल हो गए हो" - अमर ने हँसते हुए बोला।

"कम ऑन अमर, माना वो तुम्हारी बहन है लेकिन तुम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वो बहुत सेक्सी है" - राज ने कहा।

"मैं मानता हूँ वो बहुत ही सुंदर और सेक्सी है, लेकिन मैंने ये सब बातें अपने दिमाग़ से निकाल दी हैं" - अमर ने जवाब दिया।

"अगर वो मेरी बहन होती तो ..." राज कहने लगा, "क्या तुम उसके नंगे बदन की कल्पना करते हुए मुठ्ठ नहीं मारते हो?"

अमर कुछ बोला नहीं और ख़ामोश खड़ा रहा।

"शर्माओ मत यार, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो यही करता" - राज ने कहा। "क्या तुम्हारी बहन की कोई बिना धुली हुई पैंटी यहाँ नहीं है?"

"ज़रूर यहीं कहीं होगी, मैं ढूँढ़ता हूँ। तब तक खिड़की पर निगाह रखो। अगर रोशनी आती दिखे तो बताना।" - इतना कह कर अमर कमरे में मेरी पैंटी ढूँढ़ने लगा।

अमर और राज को ये नहीं पता था की मैं घर आ चुकी थी और अलमारी में छिप कर उनकी हरकतें देख रही थी।

"वो रही, मिल गई" - अमर ने गंदे कपड़े के ढेर में मेरी लाल पैंटी की ओर इशारा करता हुआ बोला।

राज ने कपड़ों के ढेर में से मेरी लाल पैंटी उठाई जो मैंने दो दिन पहले पहनी थी। पहले वो कुछ देर उसे देखता रहा। फिर मेरी पैंटी पर लगे धब्बे को अपनी नाक के पास ले जा कर सूँघने लगा।

"उम्म्म्म, क्या सेक्सी सुगंध है अमर" - कह कर वो पैंटी को अपने गालों पर रगड़ने लगा। "मुझे अब भी उसकी चूत और

गाँड़ की महक आ रही है इसमें से।"

"तू सही में पागल हो गया है।" - अमर ने कहा।

"क्या तुम सूँघना चाहोगे?" - राज ने पूछा।

"किसी हालत में नहीं"- अमर शर्माते हुए बोला।

"मैं जानता हूँ तुम इसे सूँघना चाहते हो। पर मुझसे शर्मा रहे हो।" - राज बोला, "चलो यार इसमें शर्माना कैसा, आख़िर हम दोस्त हैं।"

अमर कुछ देर तक कुछ सोचता रहा, "तुम वादा करते हो की इसके बारे में किसी से कुछ नहीं कहोगे?"

"पक्का वादा करता हूँ", राज ने कहा, "आओ अब शर्माओ मत, सूँघो इसे, कितनी मादक खुशबू है।"

अमर राज के नज़दीक पहुँचा और उसके हाथ से मेरी पैंटी ले ली। थोड़ी देर उसे निहारने के बाद वो उसे अपनी नाक पे ले ज़ोर से सूँघने लगा जैसे कोई परफ्यूम की महक निकल रही हो। मुझे ये देख कर विश्वास नहीं हो रहा था की मेरा भाई मेरी ही पैंटी को इस तरह सूँघेगा।

"सही में राज, बहुत ही सेक्सी स्मेल है, मानना पड़ेगा" - अमर सिसकते हुए बोला, "मेरा लंड तो इसे सूँघते ही खड़ा हो गया है।"

"मेरा भी।" राज अपने लंड को सहलाते हुए बोला, "क्या तुम अपना पानी इस पैंटी में छोड़ना चाहोगे?"

"क्या तुम सीरियस हो?" अमर ने पूछा।

"हाँ" - राज ने जवाब दिया।

"मगर मुझे किसी के सामने मुठ्ठ मारना अच्छा नहीं लगता" - अमर ने कहा।

"अरे यार, मैं कोई पराया थोड़े ही हूँ। हम दोस्त हैं और दोस्ती में शर्म कैसी?" - राज बोला।

"ठीक है, अगर तुम कहते हो तो!"

राज ने अपने पैंट के बटन खोले और उसे नीचे खिसका दिया। पैंट के नीचे खिसकते ही उसका खड़ा लौड़ा उछल कर बाहर निकल पड़ा। उसने एक पैंटी को अपने लंड के चारों तरफ़ लपेट लिया और दूसरी को अपनी नाक पर लगा लिया। फिर अमर ने भी अपनी पैंट उतार राज की तरह ही करने लगा। दोनों लड़के उत्तेजना में भरे हुए थे और अपने लंड को हिला रहे थे।

दोनों को इस हालत में देखते हुए मेरी भी हालत ख़राब हो रही थी। मैंने अपनी उँगली अपने पैंट के अंदर डाल अपनी चूत पर रखा तो पाया की मेरी चूत गीली हो गई थी और उससे पानी चू रहा था। अलमारी में खड़ी हुए मुझे काफ़ी दिक़्क़त हो रही थी पर साथ ही अपने भाई और उसके दोस्त को मेरी पैंटी में मुठ्ठ मारते देख मैं पूरी गरमा गई थी।

"मेरा अब छोड़ने वाला है," मेरे भाई अमर ने कहा।

मैंने साफ़ देखा की मेरे भाई का शरीर थोड़ा अकड़ा और उसके लंड से सफ़ेद वीर्य की पिचकारी निकल मेरी पैंटी में गिर रही थी। वो तब तक अपना लंड हिलाता रहा जब तक उसका सारा पानी निकल नहीं गया। फिर उसने अपने लंड को अच्छी तरह मेरी पैंटी से पोछा और अपने हाथ भी पोंछ लिए। थोड़ी देर में राज ने भी वैसा ही किया।

"इससे पहले की तुम्हारी बहन आ ज़ाए और हमें ये करते हुए पकड़ ले, मुझे यहाँ से जाना चाहिए।" - राज अपनी पैंट पहनते हुए बोला।

दोनों लड़के मेरे कमरे से चले गए। मैं भी खिड़की से कूद कर घूमते हुए घर के मेन दरवाज़े से अंदर दाख़िल हुई तो देखा अमर डाइनिंग टेबल पे बैठा सैन्डविच खा रहा था।

"हाय रोशनी" - अमर बोला।

"हाय अमर, कैसे हो?" - मैंने जवाब दिया।

"आज तुम्हें आने में काफ़ी देर हो गई?"

"हाँ, फ्रेंड्स लोग के साथ शॉपिंग में थोड़ी देर हो गई" - मैंने जवाब दिया।

मैं किचेन में गई और अपने लिए कुछ खाने को निकालने लगी। मुझे पता था की मेरा भाई मेरी ओर कितना आकर्षित है। जैसे ही मैं थोड़ा झुकी मैंने देखा की वो मेरी झाँकती हुई पैंटी को ही देख रहा था।

दूसरे दिन मैं सो कर उठी। मुझे काम पर जाना नहीं था। अमर कॉलेज जा चुका था और मम्मी-पापा काम पर जा चुके थे। मैं अपनी आँखें खोले बिस्तर पर पड़ी थी। अब भी मेरे आँखों के सामने कल का दृश्य घूम रहा था। मैंने अपने कपड़ों की ढेर की तरफ़ देखा और कल जो हुआ उसके बारे में सोचने लगी। किस तरह मेरे भाई और उसके दोस्त ने मेरी पैंटी में अपना वीर्य छोड़ा था।

पता नहीं ये सब सोचते हुए मेरे हाथ कब मेरी चूत पे चले गए और मैं अपनी उँगली से अपनी चूत की चुदाई करने लगी। मैं इतनी उत्तेजना में थी कि खुद ही ज़ोर से अपनी चूत चोद रही थी। थोड़ी देर में मेरी चूत ने पानी छोड़ दिया।

मैंने बिस्तर पर खड़े हो कर अपने पूरे कपड़े उतार दिए। अब मैं आईने के सामने नंगी खड़ी हो अपने बदन को निहार रही थी। मेरा पतला जिस्म, गुलाबी चूत सही में सुंदर दिख रही थी। मैंने घूम कर अपने चूतड़ पर हाथ फिराने लगी। मेरे भाई और उसके दोस्त ने सही कहा था। मैं सही में सेक्सी दिख रही थी।

मैं अपने कपड़ों के पास पहुँची और अपनी लाल पैंटी को उठा लिया। राज के वीर्य के धब्बे उस पर साफ़ दिखाई दे रहे थे। मैंने पैंटी को अपने नाक पे लगा ज़ोर से सूँघने लगी। राज के वीर्य की महक मुझे गरमा रही थी। मैं अपनी जीभ निकाल उस धब्बे को चाटने लगी। मेरी चूत में ज़ोरों की खुजली हो रही थी, ऐसा लग रहा था की मेरी चूत से अंगारे निकल रहे हों। अमर ने जो पैंटी में अपना वीर्य छोड़ा था उसे भी उठा सूँघने और चाटने लगी।

मैंने सोच लिया था कि जिस तरह अमर ने मेरे कमरे की तलाशी ली थी उसी तरह मैं भी उसके कमरे में जा कर देखूँगी। बहुत सालों के बाद मैं उसके कमरे में जा रही थी। मैंने उसके बिस्तर के नीचे झाँक कर देखा तो पाया की बहुत सी गंदी मैगज़ीनें पड़ी थीं। फिर मैं उसके कपड़ों को टटोलने लगी।

उसके कपड़ों में मुझे उसकी शॉर्ट्स मिल गई। मेरी पैंटी की तरह उस पर भी धब्बों के निशान थे। मैं उसके शॉर्ट्स को अपनी नाक पर ले जा कर सूँघने लगी। उसके वीर्य की ख़ुशबू आ रही थी। शायद ऐसी हरकत मैंने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी नहीं की थी। उसके शॉर्ट्स को ज़ोर से सूँघते हुए मैं अपनी चूत में उँगली कर रही थी। उत्तेजना में मेरी साँसें उखड़ रही थी। थोड़ी देर में मेरी चूत ने पानी छोड़ दिया।

मैंने तय कर लिया था कि आज शाम को जब अमर कॉलेज से वापस आएगा तो मैं घर पर ना होने का बहाना कर छुप कर फिर उसे देखूँगी। और मुझे उम्मीद थी कि वो कल की तरह मुझे घर पर ना पाकर फिर मेरी पैंटी में मुठ्ठ मारेगा।

जब अमर के आने का समय हो गया तो मैंने अपनी दिन भर पहनी हुई पैंटी कपड़ों के ढेर पे फेंक दी और कमरे से बाहर जा कर खिड़की के पीछे छुप गई। मैंने अमर के लिए एक नोट लिख कर छोड़ दिया था कि मैं रात को देर से आऊँगी। अमर जैसे ही घर आया तो उसने घर पर किसी को ना पाया। वो सीधे मेरे कमरे में पहुँचा और मेरी छोड़ी हुई पैंटी उठा कर सूँघने लगा। उसने अपनी पैंट खोली और अपने खड़े लंड के चारों ओर मेरी पैंटी को लगा मुठ्ठ मारने लगा। दूसरे हाथ से उसने दूसरी पैंटी उठा कर सूँघना शुरू कर दिया। मैं पागलों की तरह अपने भाई को मुठ्ठ मारते देख रही थी।

मैंने सोच लिया था कि मैं चुपचाप कमरे में जा कर अमर को ये करते हुए रंगे हाथों पकड़ लूँगी। मैं चुपके से खिड़की से हटी और दबे पाँव चलते हुए अपने कमरे के पास पहुँची। कमरे का दरवाज़ा थोड़ा खुला था। मैं धीरे से कमरे में दाख़िल हो उसे देखने लगी। उसकी आँखें बंद थीं और वो मेरी पैंटी को अपने लंड पे लपेटे ज़ोर-ज़ोर से हीला रहा था।

"अमर ये क्या हो रहा है?" - मैंने ज़ोर से पूछा।

उसने मेरी ओर देखा और "ओह, मर गए" कह कर बिस्तर से उछल कर खड़ा हो गया। जल्दी से उसने अपनी पैंट ऊपर कर बंद की और मेरी पैंटी को मेरे कपड़ों के ढेर पर रख दिया। उसकी आँखों में डर और शर्म के भाव थे। हम दोनों एक-दूसरे को घूरे जा रहे थे।

"आई एम सौरी, मैं इस तरह कमरे में नहीं आना चाहती थी, पर मुझे मालूम नहीं था कि तुम मेरे कमरे में होगे" - मैंने कहा।

अमर मुँह खोल कुछ कहना चाहता था, पर शायद डर के मारे उसके जुबान से एक शब्द भी नहीं निकला।

"तुम ठीक तो हो ना?" - मैंने पूछा।

"मुझे माफ़ कर दो।" - वो इतना ही कह सका।

मुझे उस पर दया आ रही थी। मैं उसे इस तरह शर्मिंदा नहीं करना चाहती थी।

"कोई बात नहीं, अब यहाँ से जाओ और मुझे नहा कर कपड़े बदलने दो।" - मैंने शांत स्वर में कहा जैसे की कुछ हुआ ही नहीं हो। उसने अपनी गर्दन हिलाई और चुपचाप वहाँ से चला गया।

रात तक वो अपने कमरे में ही बंद रहा। जब मम्मी ने काम पर से वापस आ खाना बनाया तो हम सब खाना खाने डाइनिंग टेबल पर बैठे। अमर भी इस वक्त शांति से ही बैठा था।

"बेटा अमर, क्या बात है? आज ख़ामोश क्यों बैठे हो?" - मम्मी ने पूछा।

"कुछ नहीं माँ, बस थक गया हूँ" - उसने मेरी ओर देखते हुए जवाब दिया। मैं उसे देख कर मुस्कुरा दी और वो भी मुस्कुरा दिया। खाना खाने के बाद रात में मैंने उस के कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दी। उसने दरवाज़ा खोला।

"हाय" - मैंने कहा।

"हाय" - उसने धीरे से जवाब दिया।

"क्या बात है, आज बात नहीं कर रहे, तुम ठीक तो हो?" - मैंने पूछा।

"ऐसे तो ठीक हूँ, बस आज जो हुआ उसकी शर्मिंदगी हो रही है" - उसने जवाब दिया।

"शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं है, ये सब तो होते रहता है। पर ये कब से चल रहा है मुझे कुछ बताओ?" - मैंने कहा।

"वो ऐसा है ना, मेरा दोस्त राज, तुम तो उसे जानती ही हो। वो तुमसे प्यार करता है। उसने मुझे सौ रुपये दीये अगर मैं उसे तुम्हारे कमरे में लेकर तुम्हारी पैंटी दिखा दूँ।"

"तो क्या तुम उसे लेकर आए?" - मैंने पूछा।

"मुझे कहते हुए शर्म आ रही है, पर मैं उसे लेकर आया था और उसने तुम्हारी पैंटी को सुँघा था। उसने मुझे भी सूँघने को कहा और मैं अपने आपको रोक ना पाया। तुम्हारी पैंटी को सूँघते हुए मैं इतना गरमा गया कि मैंने आज अपने आपको वापस ये करने से रोक ना पाया।"

"वैसे तो बहुत गंदी हरकत थी तुम दोनों की, फिर भी मुझे अच्छा लगा।" - मैंने हँसते हुए कहा, "तुम्हारा जब जी चाहे तुम ये कर सकते हो।"

"सही में! क्या मैं अभी कर करता हूँ? मम्मी-पापा सो रहे हैं" - उसने पूछा।

"एक ही शर्त पर जब मैं देख सकती हूँ तभी" - मैंने कहा।

हम दोनों बिना शोर मचाए मेरे कमरे में पहुँचे। मैंने टी.वी. ऑन कर दिया और कमरा बंद कर लिया जिससे सब यही समझे की हम टी.वी. देख रहे हैं।

अमर मेरे कपड़ों के पास पहुँच कर मेरी पैंटी सूँघने लगा।

"मुझे देखने दो" - हँसते हुए मैंने उसके हाथ से अपनी पैंटी खींची और ज़ोर से सूँघी, "मम्म्म, अच्छी स्मेल है।"

हम दोनों धीमे से हँसे और बेड पर बैठ गए।

"तो तुम दिन में कितनी बार मुठ्ठ मारते हो?" - मैंने पूछा।

"दिन में कम से कम तीन बार" - उसने जवाब दिया।

"क्या तुम राज को बताओगे की आज मैंने तुम्हें ये करते हुए पकड़ लिया?" मैंने फिर पूछा।

"अभी तक इसके बारे में सोचा नहीं है।"

"मैं राज को कई बार तुम्हारे साथ देखा है। देखने में स्मार्ट लड़का है।" - मैंने कहा।

"वो तुम्हें पाने के लिए तड़प रहा है," - उसने कहा।

"तुम्हें क्या लगता है मुझे उसके साथ सोना चाहिए?" - मैंने पूछा।

"हाँ, इससे उसका सपना पूरा हो जाएगा" - उसने कहा।

हम दोनों कुछ देर तक यूँ ही ख़ामोश बैठे रहे, फिर मैं उसकी आँखों में झाँकते हुए मुस्कुरा दी।

"राज अगर तुम मुझे अपना लंड दिखाओ तो मैं तुम्हें अपनी चूत दिखा सकती हूँ" - मैंने कहा।

अमर ने मेरी तरफ़ मुस्कुराते हुए हाँ कर दी। हम दोनों कुछ देर चुपचाप ऐसे ही बैठे रहे। आख़िर उसने पूछा - "पहले कौन दिखाएगा?"

"मुझे नहीं पता" - मैंने शर्माते हुए कहा।

"तुम मेरा लंड दिन में देख चुकी हो इसलिए पहले तुम्हें ही अपनी चूत दिखानी होगी" - वो बोला।

"ठीक है, पहले मैं दिखाती हूँ, लेकिन तुम्हें दुबारा से अपना लंड दिखाना होगा। पहली बार मैं अच्छे से देख नहीं पाई थी" - मैंने कहा। उसने गर्दन हिला हाँ कर दी।

मैं बिस्तर से उठ उसके सामने जाकर खड़ी हो गई। मैंने अपनी जिंस के बटन खोल कर उसे नीचे खिसका दिया और अपनी काली पैंटी भी नीचे कर दी। अब मेरी गुलाबी चूत उसके चेहरे के सामने थी। अमर दस मिनट तक मेरी चूत को घूरता रहा। मैंने अपनी जिंस ऊपर खींच बटन बंद कर बिस्तर पर बैठ गई।

"अब तुम्हारी बारी है" - मैंने कहा।

अमर बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और उसने भी अपनी जिंस और शॉर्ट्स नीचे खिसका दी। उसका सात इंच का लंड उछल कर बाहर आ गया। मैं काफ़ी देर तक उसे घूरती रही फिर उसने अपना लंड अपनी शॉर्ट्स में कर जिंस पहन ली।

"कल मम्मी-पापा किसी काम से बाहर जा रहे हैं और रात को देर से घर आने वाले हैं, तो क्या मैं कल राज को साथ में ले आऊँ?" - उसने पूछा।

"हाँ, ज़रूर ले आना" - मैंने कहा।

"मैं जब उसे बताऊँगा की मैंने तुम्हारी चूत देखी तो वो जल जाएगा" - उसने कहा।

"उससे कहना की वो चिंता ना करे, कल तुम दोनों साथ में मेरी चूत देख सकते हो" - मैंने कहा।

दूसरे दिन जब मैं काम पर थी तो अमर का कॉल मेरे सेल-फ़ोन पर आया।

"हाय, क्या कर रही हो?" - उसने पूछा।

"कुछ ख़ास नहीं, तुम कहो कैसे फ़ोन किया?"

"अगर राज अपने एक दोस्त को साथ लेकर आए तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा?" - उसने पूछा।

"अगर सब कोई इस बात को एक राज रखते हैं तो मुझे बुरा नहीं लगेगा" - मैंने जवाब दिया।

"दोनों किसी से कुछ नहीं कहेंगे ये मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ। ठीक है, शाम को मिलते हैं।" - कह कर अमर ने फ़ोन रख दिया।

जब मैं शाम को घर पहुँची तो थोड़ा परेशान थी, पता नहीं क्या होने वाला था। मैं टी.वी. चालू कर शांति से उनका इंतज़ार करने लगी। थोड़ी देर में अमर घर में दाख़िल हुआ। उसके पीछे राज और एक सुंदर सा लंबा लड़का था। उसने कंधे पर वीडियो कैमरा लटका रखा था। मैं शर्माई सी सोफ़े पर बैठी हुई थी।

"रोशनी, ये राज और प्रशांत हैं" - अमर ने मेरा उनसे परिचय करवाया।

"हैलो" - मैंने धीमी आवाज़ में कहा।

"क्या हम सब तुम्हारे कमरे में चलें?" - अमर ने पूछा।

"हाँ, यही ठीक रहेगा" - कह कर मैं सोफ़े से खड़ी हो गई।

जब हम मेरे कमरे ओर बढ़ रहे थे तो मैंने अमर से पूछा, "क्या तुम इन्हें सब बता चुके हो?"

"हाँ, क्यों क्या कोई परेशानी है?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है" - मैंने कहा।

जब हम कमरे में पहुँचे तो प्रशांत ने अपना कैमरा बिस्तर पर रख दिया।

"अमर कह रहा था कि अगर हम यहाँ आँयेंगे तो तुम अपनी चूत हमें दिखाओगी?" - राज ने कहा।

"अगर अमर कह रहा था तब तो दिखानी ही पड़ेगी" - मैंने हँसते हुए जवाब दिया।

"अगर तुम्हें बुरा नहीं लगे तो क्या मैं तुम्हारी चूत की फ़ोटो खींच सकता हूँ?" - प्रशांत ने पूछा।

"बुरा तो नहीं लगेगा, पर तुम इसे किसे दिखाना चाहते हो?" - मैंने पूछा।

"अगर तुम नहीं चाहोगी तो किसी को नहीं दिखाऊँगी, पर मैं अपनी एक वेब साईट चालू करना चाहता हूँ और मैं इस फ़ोटो को अपनी उस साईट पर डाल दूँगा। तुम्हारा चेहरा तो दिखेगा नहीं इसलिए किसी को पता नहीं चलेगा कि तुम कौन हो" - प्रशांत ने जवाब दिया।

"लगता है इससे मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं होनी चाहिए" - मैंने जवाब दिया।

प्रशांत अपना कैमरा उठा कर एडजस्ट करने लगा, फिर उसने मुझे अपनी जिंस और पैंटी उतारने को कहा। दोनों लड़के मुझे घूर रहे थे जब मैं अपनी जिंस उतार दी और अपनी पैंटी भी नीचे खिसका दी। मेरी गुलाबी और झाँटों रहित चूत खुल कर सबके सामने आ गई। प्रशांत ने कैमरा एक दम चूत के सामने कर उसका डिजिटल फ़ोटो ले लिया।

मैं अपने कपड़े पहन बिस्तर पर बैठ गई और दोनों लड़के मेरे सामने कुर्सी पर बैठे थे। हम चारों आपस में बातें करने लगे। अमर उन्हें बताने लगा कि कैसे मैंने उसे अपनी पैंटी सूँघते पकड़ा था और कैसे एक दिन पहले उसने राज को हमारे घर लाकर मेरी पैंटी सुँघाई थी। राज और प्रशांत दोनों ही अच्छे स्वभाव के लड़के थे। प्रशांत बाईस साल का था और समझदार भी था। वो दौड़ कर बाज़ार गया और सबके लिए बियर ले आया।

बातें करते करते हमारा टॉपिक सेक्स पर आ गया। सब अपनी चुदाई की कहानियाँ सुनाने लगे। कैसे ये सब कॉलेज की लड़कियों को चोदते थे। बातें करते करते सब के शरीर में गर्मी भरती जा रही थी। अचानक राज ने कहा, "क्यूँ ना हम प्रशांत के कैमरे से एक ब्लू फ़िल्म बनाते हैं और उसकी वेब-साइट पर डाल देते हैं। हम इसका पैसा भी सब व्युअर्स से चार्ज कर सकते हैं। फिर हर महीने एक नई फ़िल्म जोड़ देंगे।"

"सुनने में तो अच्छा लग रहा है" - मैंने कहा।

मैं एक कुर्सी पर बैठ गई और प्रशांत ने कैमरा मेरे चेहरे पर फ़ोकस कर दिया।

"अच्छा दोस्तों, ये सुंदर सी लड़की रोशनी है, और रोशनी तुम्हारी उम्र क्या है" - प्रशांत इंटरव्यू की शुरुआत करते हुए पूछा।

"और तुम्हारे साथ ये लड़का कौन है?" - उसने कैमरे को अमर की ओर घुमाते हुए कहा।

"ये मेरा भाई अमर है" - मैंने जवाब दिया।

"अच्छा तो ये तुम्हारा भाई है, तब तुम इसे तो अपने बचपन से जानती होगी। क्या कभी इसका लंड देखा है?" - प्रशांत ने पूछा।

मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया। "हाँ बचपन में जब हम साथ साथ नहाते थे तो कई बार देखा है, और तो अभी मैंने कल ही देखा है। मैंने इसे रंगे हाथों मेरी पैंटी को अपने लंड पे लपेट कर मुठ्ठ मारते हुए और दूसरे हाथ में दूसरी पैंटी

पकड़ सूँघते हुए पकड़ा था।" - मैंने कहा।

"और जो आपने देखा क्या वो आपको अच्छा लगा?" - प्रशांत ने पूछा।

शर्म के मारे मेरा चेहरा और लाल होता जा रहा था।

"हाँ, काफ़ी अच्छा लगा" - मैंने जवाब दिया।

"क्या तुम अमर के लंड को फिर से देखना चाहोगी?" - उसने पूछा।

"हाँ, अगर ये अपना लंड दिखाएगा तो मुझे अच्छा लगेगा" - मैंने शर्माते हुए कहा।

"ओके रोशनी, मैं तुम्हारा ड्राईवर्स लाइसेंस देखना चाहूँगा और अमर तुम्हारा भी?" - प्रशांत ने कहा।

मैंने अपना लाइसेंस निकाला और अमर ने भी। प्रशांत ने दोनों लाइसेंस पर कैमरा फ़ोकस करते हुए कहा, "दोस्तों, ये इनका परिचय पत्र है, दोनों सही में बहन-भाई हैं और शक्ल भी आपस में काफ़ी मिलती है। ठीक है, अमर अब तुम अपना लंड बाहर निकाल अपनी बड़ी बहन को क्यों नहीं दिखाते जिससे ये पहले से अच्छी तरह देख सके?"

अमर का चेहरा भी उत्तेजना में लाल हो रहा था। उसने अपनी जिंस के बटन खोले और अपनी शॉर्ट्स के साथ ही उसे नीचे खिसका दिया। उसका लंड तन कर खड़ा था।

"तुम्हारा लंड वाक़ई में लंबा और मोटा है अमर।" - प्रशांत ने कहा। फिर उसने मुझसे पूछा - "रोशनी, तुम अपने भाई के लंड के बारे में क्या कहती हो?"

मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया - "बहुत ही जानदार और सेक्सी लंड है।"

"रोशनी अब तुम अपना मुँह पूरा खोल दो, अब तुम्हारा भाई अपना लंड तुम्हारे मुँह में डालेगा, ठीक है?" - प्रशांत ने कहा।

प्रशांत की बात सुन मैं चौंक गई। मैंने ये बात सपने में भी नहीं सोची थी।

मैं और अमर एक दूसरे को घूर रहे थे।

थोड़ा झिझकते हुए मैंने कहा - "ठीक है।"

मैंने अमर की तरफ़ देखा जो मेरे पास आ अपना लंड मेरे चेहरे पे रगड़ रहा था। मैंने अपना मुँह खोला और उसने अपना लंड मेरे मुँह में डाल दिया। पहले तो मैं उसे धीरे-धीरे चूस रही थी पर फिर चेहरे को आगे-पीछे करते हुए ज़ोर से चूसने लगी। जब उसने अपना लंड मेरे मुँह से निकाला तो एक पुच्च्च्व सी आवाज़ मेरे मुँह से निकली।

मैंने पलट कर मुस्कुराते हुए कैमरे की तरफ़ देखा।

"तुम सही में बहुत अच्छे से लंड चूस लेती हो। तुम्हारा क्या ख़्याल है राज इस बारे में?" - प्रशांत ने कैमरा राज की ओर

मोड़ दिया जो अपना लंड अपने ही हाथों में ले हिला रहा था।

प्रशांत ने फिर से कैमरा मेरी तरफ़ करते हुए कहा, "रोशनी, हम सब और तुम्हारे दर्शक तुम्हारी चूत को देखने के लिए मरे जा रहें हैं। क्या तुम अपनी जिंस और पैंटी उतार उन्हें अपनी चूत दिखा सकती हो?"

मैंने अपनी जिंस और पैंटी उतार दी।

"बहुत अच्छा, मुझे तुम्हारी चूत पर कैमरा फ़ोकस करने दो," - कह कर प्रशांत ने कैमरा ठीक मेरी चूत के सामने कर दिया। "एक भी बाल नहीं हैं तुम्हारी चूत पर जैसे आज ही पैदा हुई हो!" प्रशांत बोला, "अब तुम सब के लिए अपनी चूत से खेलो।"

मैंने अपना हाथ अपनी चूत पर रख दिया और अपनी उँगली अंदर डाल रगड़ने लगी।

"मम्म्म्म", मेरे मुँह से सिस्कारी निकल रही थी।

"बहुत अच्छा रोशनी, लेकिन क्या तुम जानती हो अब हम सब क्या देखना चाहेंगे?" - प्रशांत ने पूछा।

"क्या देखना चाहोगे?" - मैंने पूछा।

"अब हम सब तुम्हारी गांड देखना चाहेंगे।" प्रशांत ने कहा, "तुम पीछे घूम कर अपनी गांड कैमरे के सामने कर दो।"

मैंने अपनी गर्दन हिलाते हुए अपनी सैंडल उतार दी। फिर अपना टॉप और ब्रा भी खोलकर एकदम नंगी हो गयी। मैं बिस्तर पर लेट अपनी टाँगे घुटनों तक मोड़ अपनी छाती पे कर ली। प्रशांत ने कैमरा मेरी चूत और गांड पर ज़ूम कर दिया।

"अमर तुम अपनी बहन की चूत को चाटोगे?" - प्रशांत ने कहा।

अमर ने हाँ में अपनी गर्दन हिला दी।

"रोशनी, तुम्हें तो कोई एतराज नहीं है अगर अमर तुम्हारी चूत को चाटे?" - प्रशांत ने पूछा।

"मुझे कोई एतराज नहीं है, बल्कि मैं तो कब से इंतज़ार कर रहीं हूँ कि कोई मेरी चूत को चाटे" - मैंने हँसते हुए कहा।

अमर घुटने के बल मेरी जाँघों के बीच बैठ गया और धीर से अपनी जीभ मेरी चूत पर रख दी। वो धीरे-धीरे मेरी चूत को चाट रहा था। थोड़ी देर मेरी चूत को चाटने के बाद वो अपनी जीभ से मेरी चूत से लेकर मेरी गांड के छेद तक चाटने लगा। फिर वो मेरी चूत को अपने मुँह में लेकर चूसने लगा।

"अमर क्या तुम्हें अपनी बहन की चूत का स्वाद अच्छा लग रहा है?" - प्रशांत ने पूछा।

"बहुत ही अच्छा स्वाद है। मज़ा आ गया।" - अमर मेरी चूत को और ज़ोर से चूसता हुआ बोला।

"कौन सा स्वाद अच्छा है - चूत का या गांड का?" - राज ने पूछा जो अब भी अपने लंड को हिला रहा था।

"पहले मुझे चख़ने दो फिर बताता हूँ।" - कह कर अमर ने अपनी एक उँगली पहले मेरी चूत में डाल दी फिर उसे निकाल अपने मुँह में डाल चूसने लगा। ऐसा ही उसने मेरी गांड के साथ भी किया। "वैसे तो दोनों ही स्वाद अच्छे हैं पर मुझे चूत का स्वाद ज़्यादा अच्छा लग रहा है।"

"मुझे भी मेरी चूत का स्वाद चखाओ ना" - मैंने अमर से कहा।

अमर ने अपनी दो उँगलियाँ पूरी की पूरी मेरी चूत में डाल गोलगोल घुमाने लगा। मेरी चूत की अंदर से खुलने लगी। मैंने अपनी चूत की नसों द्वारा उसकी उँगलियों को भींच लिया। थोड़ी देर में उसने अपनी उँगली बाहर निकाल मेरे चेहरे के सामने कर दी।

मैं कैमरे की ओर देखते हुए उसकी उँगलियाँ झपटकर अपने मुँह में चूसने लगी जैसे मैं किसी लौड़े को चूस रही हूँ। अमर ने फिर से अपनी उँगलियाँ मेरी चूत में डाल दी और अंदर-बाहर करने लगा। फिर उसने झुक कर अपनी नुकीली जीभ मेरी चूत में डाल दी। उसकी जीभ काफ़ी लंबी थी और क़रीब तीन इंच तक मेरी चूत में घुसी हुई थी। फिर वो नीचे की ओर होते हुए मेरे गांड के छेद को चूसने लगा।

"कैसा लग रहा है रोशनी?" - प्रशांत ने पूछा।

"मममम्म् - बहुत मज़ा आ रहा है।" - मैंने सिसकते हुए जवाब दिया।

"क्या अब तुम अपने भाई के लंड को अपनी गांड में लेना चाहोगी?" - प्रशांत ने कैमरे को मेरी गांड की ओर करते हुए पूछा।

"हाँ उसे कहो जल्दी से अपना लंड मेरी गांड में पेल दे" - मैंने कहा।

मेरा भाई उठ कर खड़ा हो गया। मैंने भी अपनी टाँगें सीधी कर थोड़ा उन्हें आराम दिया और फिर टाँगों को मोड़ छाती पर रख ली।

"अमर क्या तुमने कभी सोचा था कि तुम अपना लंड अपनी बहन की गांड में डालोगे?" - प्रशांत ने पूछा।

"हाँ सपने देखते हुए मैं कई बार अपना लंड का पानी छोड़ा है" - अमर ने जवाब दिया।

"देखो तुम्हारी बहन अपनी गांड को ऊपर उठाए तुम्हारे लंड का इंतज़ार कर रही है। मैं, राज और हमारे सभी दर्शक

इसका बेताबी से ये देखना चाहते हैं।" - प्रशांत ने कहा, "आज मैं डायरेक्टर हूँ इसलिए जैसा मैं बोलता हूँ वैसा करो। पहले अपने लंड के सुपाड़े को इसकी गांड पर रगड़ो।"

अमर ने वैसा ही किया।

"अब धीरे से अपना लंड इसकी गांड में पेल दो" - उसने कहा।

अमर बड़े प्यार से अपना लंड मेरी गांड में घुसाने लगा। उसका सुपाड़ा घुसते ही मेरी गांड अंदर से खुलने लगी। उसका लंड काफ़ी मोटा था और वो अपने ७ इंची लंड को एक-एक इंच करके घुसाता रहा जब तक की उसका पूरा लंड मेरी गांड में घुस नहीं गया।

"अमर, अब कस कस कर धक्के मारो और अपना पूरा पानी इसकी गांड में उड़ेल दो" - प्रशांत ने कहा।

अमर अब मेरे चूतड़ पकड़ तूफ़ानी रफ़्तार से मेरी गांड मार रहा था। हम दोनों पसीने से तर-बत्तर हो गए थे। मैं अपने हाथ से अपनी चूत घसते हुए अपनी उँगली अंदर-बाहर करने लगी। मेरे मुँह से सिसकारियाँ फूट रहीं थीं।

"ओह हाँ ऐसे ही किए जाओ .. और ज़ोर से अमर .. हाँ .. चोदो मुझे .. फाड़ दो मेरी गांड को .. आह मैं गई .."

मेरे चूत में उबाल आना शुरू हो गया था और दो धक्कों में ही मेरी चूत ने पानी छोड़ दिया।

"मेरा भी छूट रहा है" - कह कर अमर ने अपने लंड के वीर्य की बौछार मेरी गांड में कर दी।

हम दोनों के बदन ढीले पड़ गए थे और हम गहरी साँसें ले रहे थे। उसका लंड धीरे-धीरे ढीला पड़ने लगा था। मैंने मुस्कुराते हुए उसे बाहों में ले कर चूम लिया।

प्रशांत अपने कैमरे से शूट कर रहा था। उसने कैमरे को बंद करते हुए कहा - "रोशनी, ये हमारा आज का आख़िरी सीन था। उम्मीद है हम जल्दी ही मिलेंगे। ओके, बाई।"

"बाई बाई सब कोई" - मैंने जवाब दिया।

मैं भी खड़े हो अपने कपड़े पहनने लगी। तीनों लड़के मुझे देख रहे थे।

"क्या तुम सब कोई अगली बार फिर से कुछ सीन्स शूट करना चाहोगे? मैं चाहता हूँ कि हमारी वेब-साइट सबसे अच्छी पॉर्न साइट बन जाए।" - राज ने कहा।

"हाँ, ज़रूर करना चाहेंगे" - अमर बोला।

"हाँ मुझे भी अच्छा लगा। मैं तैयार हूँ।" - मैंने जवाब दिया।

थोड़ी देर में राज और प्रशांत चले गए। मेरे मम्मी-डैडी भी घर आ गए थे। रात को हम सब खाना खाने डाइनिंग टेबल पर

जमा हुए। मैं और अमर ख़ामोशी से खाना खा अपने-अपने कमरे में सोने चले गए।

दो हफ़्ता गुज़र गया। मेरे और अमर के बीच इस दौरान किसी तरह की बातचीत नहीं हुई थी। मुझे लगा कि पॉर्न साइट के लिए सीन शूट अब एक कहानी हो कर रह गई है। शायद सब कोई इसे भूल चुके हैं। लेकिन हर रात सोने से पहले मैं उस शाम के बारे में सोचते हुए अपनी चूत की गर्मी को अपनी उँगलियों से शांत करती थी।

फिर एक दिन कॉलेज जाने से पहले अमर मेरे कमरे में आया, "राज और प्रशांत पूछ रहे थे कि क्या तुम दूसरी फ़िल्म करना चाहोगी?"

"मैं खुद यही सोच रही थी कि तुम लोग ये फ़िल्म फिर कब करोगे?" - मैंने कहा।

"मम्मी-डैडी दो दिन के लिए बाहर जा रहे हैं" - अमर ने कहा।

"क्या तुम लोग फिर आना चाहोगे?" - मैंने पूछा।

"अगर तुम हाँ कहोगी तो" - अमर ने जवाब दिया।

उस दिन मैं काम पर चली गई और पूरे दिन शाम होने का इंतज़ार करती रही। सिर्फ़ सोच-सोच के मैं इतना गरमा गई

थी कि मेरी चूत से पानी चूने लगा था। आख़िर शाम को ठीक पाँच बजे मैं घर पहुँच गई। घर में घुसते ही मैंने तीनों को सोफ़े पर बैठे देखा।

"हाय सब कोई, कैसे हो?" - मैंने पूछा।

"हम सब ठीक हैं, तुम कैसी हो?" - राज ने पूछा।

मैंने वहाँ ज़मीन पर कुछ सामान पड़ा देखा।

"ये सब क्या है?"

"ये मेरे कैमरा का सामान है - स्टैंड, ट्राईपॉड वगैरह - इससे मुझे कैमरा पकड़ कर शूट नहीं करना पड़ेगा। ऑटोमैटिक शूट होता रहेगा।" - प्रशांत ने कहा।

"ठीक है, अब क्या प्रोग्राम है? शूटिंग कहाँ पर करना चाहोगे?" - मैंने पूछा।

"हम यहाँ भी कर सकते हैं" - प्रशांत ने कहा।

प्रशांत ने अपना कैमरा ऑन किया और मुझ पर केंद्रित कर दिया।

"दोस्तों, हम आज फिर सुंदर रोशनी के साथ बैठे हैं।"

मैंने अपना हाथ कैमरे के सामने हिलाया।

"और ये अमर है, रोशनी का भाई। इससे तो आप सभी कोई मिल चुके हैं।"

अमर ने भी अपना हाथ हिलाया।

"चलो, अब तुम दोनों शुरू हो जाओ" - प्रशांत ने एक डायरेक्टर की तरह निर्देश दिया।

मैंने और अमर ने एक दूसरे को मुस्कुराते हुए देखा। अमर आगे बढ़ मेरे होठों पर अपना होंठ रख चूमने लगा। मैंने अपनी जीभ बाहर निकाली और अमर मेरी जीभ को चूसने लगा। फिर उसने अपनी जीभ मेरे मुँह में डाल दी। हम दोनों की जीभ एक-दूसरे के साथ खेल रही थी।

"ओके रोशनी, अब हमारे दर्शक तुम्हारी सुंदर और आकर्षक गांड एक बार फिर देखना चाहेंगे। क्या तुम दिखाना पसंद करोगी?" - प्रशांत ने पूछा।

"क्यों नहीं।" - इतना कह कर मैंने अपनी पैंट और टॉप उतार दी। फिर अपनी पैंटी को निकाल मैं उसे सूँघने लगी और

उसे अपने भाई की ओर उछाल दिया। वह भी मेरी पैंटी को लपक सूँघने लगा। फिर मैं सोफ़े पर लेट गई और अपनी टाँगें अपने कंधे पर रख ली जिससे मेरी गांड उठ गई।

प्रशांत ने कैमरा मेरी गांड पर जूम कर दिया।

"मैंने इतनी गुलाबी और सुंदर गांड आज तक नहीं देखी" - प्रशांत ने कहा। "अमर, अब अपनी बहन की गांड को चोदने के लिए तैयार करो।"

अमर ने अपनी उँगली मुँह में ले गीली की और मेरी गांड में अंदर तक घुसा दी। अब वो अपनी उँगली को मेरी गांड में गोलगोल घुमा रहा था।

प्रशांत ने कैमरा को स्टैंड पर लगा उसे ऑटोमैटिक सिस्टम पर कर दिया।

मैंने देखा कि प्रशांत भी अपने कपड़े उतार नंगा हो चुका था।

प्रशांत अब मेरे पास आया और मुझे गोद में उठा लिया। ठीक कैमरे के सामने आ वो सोफ़े पर लेट गया और मुझे पीठ के बल अपनी छाती पर लिटा लिया। मेरे चूतड़ों को उठा उसने अपने खड़े लंड को मेरी गांड के छेद पर लगा मुझे नीचे करने लगा। कैमरे में उसका लंड मेरी गांड में घुसता हुआ दिखाई पर रहा था। अब वो नीचे से धक्के लगा रहा था साथ ही मेरे चूतड़ को अपने अपने लंड के ऊपर नीचे कर रहा था।

"अमर, आओ अब अपने लंड को अपनी बहन की चूत में डाल दो तब तक मैं नीचे से इसकी गांड मारता हूँ।" - प्रशांत मेरे मुम्मों को भींचते हुए बोला।

अमर तुरंत अपने कपड़े उतार नंगा हो एक ही झटके में अपना लंड मेरी चूत में डाल दिया।

मेरे मुँह से सिसकारी निकल पड़ी - "ओहहह आहहहहह !"

मुझे बहुत ही मज़ा आ रहा था। ऐसी चुदाई मैंने सिर्फ़ ब्लू फ़िल्मों में देखी थी लेकिन आज खुद करवा रही थी। एक लंड नीचे से मेरी गांड मार रहा था और दूसरा लंड मेरी चूत का भुरता बना रहा था।

जब अमर अपना लंड मेरी चूत में जड़ तक पेलता तो उसके बदन के दबाव से मैं पूरी तरह से प्रशांत के लंड पर दब जाती जिससे उसका लंड भी मेरी गांड की जड़ तक जा घुसता।

दोनों ख़ूब ज़ोर से धक्के लगा रहे थे और मेरी साँस उखड़ रही थी।

"हाँ ... चोदो मुझे ... और ज़ोर से .. हाँ अमर ऐसे ही .. रूको मत .. हाँ और तेज .. और तेज .. हाँ .. ओहहहह!"

प्रशांत ने मुझे थोड़ा ऊपर उठा घोड़ी बना दिया। अमर ने अपना लंड मेरी चूत से निकाल पीछे हो कर खड़ा हो गया। प्रशांत अब मेरे चूतड़ पकड़ ज़ोर के धक्के मार रहा था। उसके भी मुँह से सिसकारी निकल रही थी। इतने में मैंने उसके वीर्य की बौछार अपनी गांड में महसूस की। वो तब तक धक्के मारता रहा जब तक की उसका सारा पानी नहीं छूट गया।

प्रशांत खड़ा हो कैमरे को अपने हाथ में ले मेरी गांड के छेद पर जूम कर दिया। उसका वीर्य अब तक मेरी गांड से चू रहा था।

"अपनी गांड को अपने हाथों से फैलाओ" - उसने कहा।

मैंने अपने दोनों हाथों से अपनी गांड और फैला दी। ऐसा करने से उसका वीर्य मेरी गांड से टपकने लगा।

"अमर, देखो तुम्हारी बहन की गांड से कैसे मेरा पानी टपक रहा है" - प्रशांत कैमरे को मेरी गांड के और नज़दीक करते हुए बोला।

"अच्छा है, अब मुझे अपना लंड घुसाने में परेशानी नहीं होगी" - अमर ने हँसते हुए कहा। फिर वो मेरे चेहरे के पास आ अपना लंड थोड़ी देर के लिए मेरे मुँह में दिया। मैंने दो-चार बार ही चूसा होगा कि उसने अपना लंड निकाल लिया। मेरे पीछे आ उसने एक ही झटके में अपना पूरा लंड मेरी गांड में डाल दिया और धक्के मारने लगा। थोड़ी देर मेरी गांड मारने के बाद

उसने अपना पानी मेरी गांड में छोड़ दिया।

मैंने अपनी उँगलियों को उसके पानी से भिंगोने लगी और फिर कैमरे के सामने देखती हुई अपनी उँगली चूसने लगी।

"अगली बार जल्दी ही मिलेंगे" - कह कर मैंने अपना हाथ कैमरे के सामने हिला दिया।